जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – नवंबर 2023 ।। अंक – 40 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

सामाजिक रुढ़िवादिता और कुरीतियों का उन्मूलन (पृष्ठ – 02)

जीविका से मिली नई पहचान (पृष्ठ – 03)

महानंदा जीविका महिला एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, किशनगंज (पृष्ठ – 04)

जीविका दीदियों द्वारा सामाजिक विकास की पहल

बिहार सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना, जीविका, ग्रामीण निर्धन समुदाय के सामाजिक एवं आर्थिक विकास हेतु निरंतर कार्य कर रही है। बिहार में वर्ष 2007 में जीविका की शुरुआत के साथ ही राज्य में स्वयं सहायता समूहों का गठन और जीविका दीदियों द्वारा सामाजिक विकास का कार्य शुरू कर दिया गया। जीविका समूह के गठन से ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं संगठित होने लगीं। घर की चाहरदीवारी में कैद रहने वाली महिलाएं अब घर से बाहर निकालने लगीं। नियमित रुप से समूह की साप्ताहिक बैठक में भाग लेकर समाज एवं परिवार के हित में विचार–विमर्श कर आपस में निर्णय लेना शुरु कर दिया। आवश्यकता पड़ने पर वे एक–दूसरे की मदद भी करने लगीं। विभिन्न जाति एवं धर्म की महिलाएं जीविका के सामुदायिक संगठनों की बैठक में एक साथ बैठने लगीं। निरक्षर महिलाओं को हस्ताक्षर करना सिखाया जाने लगा। जो महिलाएं पहले किसी की बेटी, पत्नी, बहु या मायके के गाँव के नाम से जानी–पहचानी जाती थीं, जीविका समूह में जुड़ने के बाद उन्हें नई पहचान मिली और वह अपने नाम से पुकारी जाने लगीं। इस तरह जीविका समूह के माध्यम से गाँव एवं समाज में उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनायी। समूह के काम से दीदियां बैंक एवं अन्य सरकारी कार्यालयों में जाकर अधिकारियों से संवाद करने लगी हैं, जिससे उनके मनोबल में बढ़ोतरी हुई है। "महिलाएँ कुछ नहीं कर सकती" समाज में महिलाओं के प्रति बनी इस धारना को जीविका दीदियों ने जीविका के सामुदायिक संगठनों के माध्यम से संगठित होकर खत्म किया है। समूह के माध्यम से दीदियों ने बचत के महत्व को जाना एवं समूह से सस्ती ब्याज दर पर ऋण लेकर साहुकारों से मुक्ति पायी है। साथ ही समूह की सहायता से उन्हें विभिन्न विषयों के बारे में जानकारी मिली, जिससे जीविकोपार्जन की राह आसान हुई है।

जीविका दीदियों ने ग्राम संगठन स्तर पर जीविका द्वारा संचालित गतिविधियों के अलावा समाज के हित में सामाजिक कुरीतियों एवं बुराइयों के खिलाफ भी आवाज उठाना शुरु किया। सामुदायिक संगठनों की बैठकों के अलावे समय–समय पर प्रभात फेरी, रैली, परिचर्चा आदि के माध्यम से सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जीविका दीदियों ने लोगों को जागरूक करने का कार्य किया है। समय के साथ उनकी आवाज और मुखर हुई है। पटना में आयोजित एक कार्यक्रम के अवसर पर कुछ जीविका दीदियों ने शराब पर प्रतिबंध लगाने का अनुरोध बिहार के माननीय मुख्यमंत्री से किया था। माननीय मुख्यमंत्री ने उनकी इस मांग को स्वीकार करते हुए राज्य में पूर्ण शराबबंदी की घोषणा की थी। इसके बाद जीविका दीदियों को बल मिला, जिससे शराब बंदी के खिलाफ जीविका दीदियां निरंतर अभियान चला रही हैं।

प्राकृतिक आपदाओं के समय भी जीविका दीदियों ने बचाव के लिए सराहनीय कार्य किया है। बाढ़ के समय सामुदायिक किचेन संचालित कर बाढ़ पीड़ितों को भोजन उपलब्ध कराया एवं राहत सामग्री की पैकिंग करने में मदद किया। कोरोना काल के दौरान राशन कार्ड बनवाने का कार्य किया। कोरोना से बचाव हेतु विभिन्न विभागों को आवश्यकता के अनुसार दीदियों ने मास्क सिलाई एवं आपूर्ति का काम किया। अस्पतालों में संचालित दीदी की रसोई के माध्यम से भर्ती मरीजों के अलावे कोरोना से ग्रसित मरीजों को भी भोजन उपलब्ध कराया।

जीविका दीदियों ने बिहार सरकार द्वारा संचालित सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत अत्यंत गरीब परिवारों के चयन से लेकर उनके रोजगार की शुरुआत एवं संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

दीदियों की एकजुटता और निडरता से पूर्णतः शराब मुक्त हुआ गांव

भागलपुर के सन्हौला प्रखंड स्थित अलविदा जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य शमा परवीन समाज सुधार अभियानों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती रही हैं। हालांकि इसकी वजह से उन्हें काफी सामाजिक दबाव सहना पड़ा, इसके बावजूद उन्होंने समाज सुधार अभियान से अपने कदम पीछे नहीं किए। शमा अपने ग्राम संगठन की दीदियों के साथ मिलकर निरंतर शराब के खिलाफ अभियान चलाती रही हैं। वह अपने गांव में जागरूकता रैली निकालकर लोगों को शराब का सेवन नहीं करने के लिए प्रेरित करती है। इससे चोरी–छुपे शराब की अवैध बिक्री करने वाले लोगों की ओर से इन्हें धमकियां भी मिलने लगीं। कुछ लोगों ने परिणाम भुगतने की चेतावनी दी। शमा ने समूह की साप्ताहिक बैठक के दौरान इस बात की चर्चा की। समूह की एक अन्य सदस्य रूबी देवी ने भी अपने पति के बारे में बताया कि शराब की लत की वजह से उनके पति घर में प्रतिदिन लड़ाई–झगड़ा करते हैं। रूबी देवी ने बताया कि मेरे पति रोज की कमाई को शराब में उड़ा देते हैं, जिससे घर की आर्थिक स्थिति खराब रहती है। साथ ही बच्चों की मनोस्थिति पर भी बुरा प्रभाव पड़ रहा है। बैठक में सर्वसम्मति से सभी दीदियों ने यह निर्णय लिया कि इस बात की शिकायत स्थानीय थाना में की जाएगी। इसके बाद शमा परवीन के नेतृत्व में रूबी देवी और समूह की अन्य दीदियां स्थानीय थाना गईं और वहां शराब माफियाओं के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। इसके बाद दीदियों की शिकायत एवं गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने शराब विक्रेताओं को शराब बेचते हुए रंगे हाथ पकड़ लिया। पुलिस ने पूरी शराब जब्त कर ली एवं उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। शराब माफियाओं के जेल जाने के बाद गांव में किसी ने भी शराब की अवैध बिक्री करने या इसका सेवन करने की हिम्मत नहीं दिखाई। इस प्रकार शमा परवीन और समूह की दीदियों की जागरूकता, सक्रियता एवं निडरता के साथ–साथ स्थानीय प्रशासन की त्वरित कार्रवाई से गांव को पूरी तरह शराब मुक्त किया जा सका।

सामाजिक रूढ़िवादिता और कुरीतियों का उन्मूलन

सामाजिक रुढ़िवादिता और कुरीतियों के उन्मूलन में ग्रामीण परिवेश की महिलाएं भी अहम् भूमिका निभा रही हैं। उन्ही में से एक हैं लखीसराय जिला अंतर्गत सूर्यगढ़ा प्रखंड स्थित हल्दीपुर गाँव की अम्बरी खातुन। वर्ष 2014 से मुस्कान जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी अम्बरी खातुन अपने गाँव में शिक्षा का अलख जगाने के साथ–साथ पर्दा प्रथा के उन्मूलन हेतु जन–जागरूकता अभियान चला रही हैं। अम्बरी खातुन ने सामुदायिक संसाधन सेवी का कार्य करते हुए अपने समाज की महिलाओं को घर की ड्योढ़ी से बाहर निकलकर समूह से जोड़ा है। समूह से स्वरोजगार के लिए ऋण दिलाकर गाँव की पचास से ज्यादा महिलाओं को स्वावलंबन की राह दिखाई है। समूह से जुड़ी महिलाओं को उनके बच्चे–बच्चियों को स्कूल भेजने के लिए भी जागरूक किया। जिससे स्कूलों में छात्र–छात्राओं की संख्या बढ़ी है। अम्बरी खातुन बताती हैं कि मेरे लिए भी जीविका समूह से जुड़ना काफी कठिन था। घर की महिलाओं को बाहर निकलने की पाबंदी थी। कड़े विरोध के बावजूद वो मुस्कान जीविका महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़ी और सामुदायिक संसाधन सेवी का कार्य करने लगी। इन्होंने महिलाओं को समूह से जोड़ा और शिक्षा का माहौल बनाने तथा पर्दा प्रथा के उन्मूलन हेतु जन जागरण अभियान चलाया। साथ ही समूह से जुड़ी सदस्यों को उनकी रूचि के अनुरूप ऋण दिलाकर स्वरोजगार कराया है। अम्बरी खातुन ने आर्थिक तंगी से परेशान होकर खुदकुशी करने जा रही वनम्रा दीदी को समझाया और उन्हें स्वरोजगार करने के लिए प्रेरित किया। अम्बरी खातुन मद्य निषेध अभियान, खुले में शौच मुक्त अभियान, बाल विवाह, दहेज़ मुक्त विवाह और पूर्व से ही लैंगिक हिंसा के विरुद्ध जन जागरूकता अभियान चला रही है। इस कार्य के लिए जिला प्रशासन, लखीसराय द्वारा उन्हें सम्मानित भी किया गया है।

दु:ख की घड़ी में पिंकी देवी को जीविका का सहारा

अरवल जिला के कुर्था प्रखंड अंतर्गत पिंजराबां पंचायत के सबलक सराय गाँव में रहने वाली पिंकी देवी मैट्रिक पास है। उनके पति पंचायत के बाज़ार में ही एक छोटा–मोटा होटल चलाते थे। उसी से घर–परिवार का पालन पोषण हो रहा था। लेकिन साल 2016 में उनके पति की तबीयत अचानक ख़राब हो गई। डॉक्टर ने उनके पति को आराम करने की सलाह दी। इसके बाद पिंकी देवी के परिवार की आर्थिक स्थिति धीरे –धीरे बिगड़ने लगी, क्योंकि घर में कमाने वाले एक मात्र उनके पति ही थे।

साल 2018 में पिंकी देवी ने अपने घर की स्थिति को समूह की दीदियों के सामने रखी। तब समूह की दीदियों ने पिंकी दीदी को कोई रोजगार करने की सलाह दी। पिंकी देवी ने समूह से 50,000 रूपये ऋण लेकर गाँव के नजदीकी बाज़ार में श्रृंगार दुकान खोली। दुकान संचालन से धीरे –धीरे आमदनी होने लगी। जिसके फलस्वरूप पिंकी देवी को दुकान से अच्छी आय होने लगी। श्रृंगार की दुकान से महीने में लगभग 12 से 15 हजार रूपये की आमदनी हो जाती है। दीदी कहती है कि शादी और लगन के समय प्रतिदिन 3000–4000 रुपये की बिक्री हो जाती है। पिंकी देवी के दो बेटे और और एक बेटी है। उन्हें भी वह अच्छी शिक्षा दिला रही है। दुकान की आय से उन्होंने अपने पति का इलाज करवाई है। अब उनके पति भी पूरी तरह से स्वस्थ्य हो गए हैं और होटल का काम फिर से उन्होंने शुरू कर दिया है। पिंकी देवी ने समूह से लिए गए ऋण को वापस भी कर दी हैं। अब पिंकी दीदी और उनके पति दोनों खुश हैं और एक दूसरे के कार्यों में सहयोग करते हैं। वह इस बदलाव के लिए जीविका परियोजना को तहे दिल से धन्यवाद देती हैं।

जीविका से मिली नई पहचान

मुजफ्फरपुर जिला के मुरौल प्रखंड के बखरी गांव में निवास करने वाली नीलम देवी ने खेती से अपना एक अलग मुकाम हासिल की है। पति विश्वनाथ महतो के साथ नीलम देवी खेती बाड़ी के साथ ही नर्सरी का काम बखूबी कर रही है। महज पांचवी तक पढ़ी नीलम देवी अपने पति और बच्चों का ख्याल अच्छे से रखते हुए नर्सरी के काम में भी सहयोग करती है। नीलम देवी बताती है कि एक वक्त ऐसा था कि घर में आमदनी बिल्कुल नहीं हो रही थी और ऐसे में खाने के भी लाले पड़ रहे थे। तीन बच्चों की परवरिश करने में नीलम देवी को काफी मुश्किल का सामना करना पड़ रहा था, ऐसे में जीविका मित्र ने उन्हें जीविका समूह से जुड़ने की बात बतायी। तकरीबन 10 साल पहले समूह से जुड़ी नीलम 10 रुपए प्रति सप्ताह अपने समूह में बचत कर अपने सपनों को साकार करने के लिए कार्य प्रारंभ किया था। पहली बार 5 कट्ठा जमीन को लीज पर लेकर खेती शुरू की जिसके लिए 20,000 रूपए समूह से ऋण लिया और आलू की खेती के साथ ही अन्य सब्जी की खेती करते हुए साल में 80,000 रूपए की कमाई की। इस कमाई से उनका हौसला मजबूत हुआ और धीरे–धीरे फलों और सब्जियों की खेती के साथ नर्सरी भी चलाना शुरु किया। नीलम आज लीज पर जमीन लेकर फल एवं फसल उत्पादन कर सालाना 2 से 3 लाख रूपए की कमाई कर रही है। सबसे ज्यादा कमाई नीलम पपीते की खेती से कर रही है, जिससे प्रतिदिन उन्हें 500 से 1000 रूपए की आमदनी होती है। साथ हीं सब्जियों की खेती में भी नीलम को अच्छा लाभ होता है। पति के साथ खेती–बाड़ी करते हुए अपने जीवन को वह आसान बना रही है। आज उनके बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ रहे हैं। उन्हें अब समूह की शक्ति का एहसास हो चुका है। खेती–बाड़ी से अपनी जिंदगी सवार रही नीलम पूरे समाज के लिए एक मिसाल बन गई है।

महानंदा जीविका महिला एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, किशनगंज

किशनगंज जिला में बड़े पैमाने पर जीविका दीदियाँ चाय की खेती करती हैं। यहाँ चाय की खेती के लिए अनुकूल मिट्टी और जलवायु है। चाय पत्ती के साथ – साथ अनानास, मक्का, धान की भी खेती करती हैं। जीविका दीदियों की फसलों को उचित मूल्य और बाजार उपलब्ध करवाने के लिए 14 जून 2021 को 'महानंदा जीविका महिला एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड' का गठन, कंपनी एक्ट के तहत किया गया। अबतक इस कंपनी में कुल 320 शेयर धारक (जीविका दीदियाँ) जुड़ चुकी हैं। जो मुख्य रूप से चाय के उत्पादन से जुड़ी हुई हैं। वर्त्तमान में कुल 10 चाय उत्पादक समूह गठित है। जिसमें किशनगंज जिला के ठाकुरगंज, पोठिया एवं किशनगंज सदर प्रखंड की जीविका दीदियाँ जुड़ी हुई हैं। इस कंपनी से जुड़ी 320 चाय उत्पादन करने वाली जीविका दीदियाँ वर्त्तमान में लगभग 824 एकड़ क्षेत्र में चाय की खेती कर रही हैं। कंपनी से जुड़ी सभी दीदियों को उन्नत विधि से चाय की खेती के लिए 'टी रिसर्च एसोसिएशन' के वैज्ञानिकों द्वारा प्रशिक्षित किया गया है। वर्त्तमान में जीविका दीदियों द्वारा उत्पादित चाय पत्ती, उत्पादक समूह के माध्यम से सीधे टी फैक्ट्री में बेचा जा रहा है। चाय की खेती से जुड़ी अधिक से अधिक जीविका दीदियों को महानंदा जीविका महिला एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। जीविका के माध्यम से उन्हें उन्नत तकनीक एवं वैज्ञानिक विधि से चाय की खेती का प्रशिक्षण प्राप्त हो रहा है। कंपनी के माध्यम से उन्हें चाय की अच्छी कीमत मिल रही है। अपनी कंपनी होने से अब जीविका दीदियों को बिचौलियों से मुक्ति मिली है, जिससे उनकी आमदनी भी बढ़ रही है। जीविका दीदियाँ ही महानंदा जीविका महिला एग्रो प्रोडूसर कंपनी का संचालन कर रही हैं। आने वाले समय में किशनगंज जिला के पोठिया प्रखंड के केचकचीपाड़ा में स्थित सरकारी टी फैक्ट्री का संचालन जीविका दीदियाँ ही करेंगी। चाय की खेती से जुड़ी जीविका दीदियाँ, अपनी कंपनी में चाय के हरे पत्ते को सीधे बेचने, चाय पत्ती का निर्माण एवं उसका मार्केटिंग का काम भी संभालेंगी। इन सब के लिए उनका क्षमतावर्धन किया जा रहा है। उन्हें सभी प्रकार के प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं। चाय के साथ–साथ अनानास, मक्का, धान इत्यादि फसल को इस कंपनी के माध्यम से बजार में बेचा जा रहा है। किशनगंज जिला में चाय की खेती से जुड़ी जीविका दीदियाँ अब उद्यमिता की तरफ कदम बढ़ा रही हैं। महानंदा एफपीसी के माध्यम से चाय की खेती, उत्पादन, बिक्री, विपणन आदि की जिम्मेदारी जीविका दीदियाँ अपनी हौंसलों से भरे कंधों पर संभाल रही हैं।

महानंदा जीविका महिला एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी लि. का अब तक का व्यापार विवरण

क्रमांक	उत्पाद	वित्तीय वर्ष 2021–22		वित्तीय वर्ष 2022–23		वित्तीय वर्ष 2023–24 (30 सितंबर–2023 तक)	
		मात्रा (किलोग्राम में)	कुल व्यवसाय	मात्रा (किलोग्राम में)	कुल व्यवसाय	मात्रा (किलोग्राम में)	कुल व्यवसाय
1	अनानास	10100	141400	31144	622946	0	0
2	मक्के का बीज			240	85100	0	0
3	धान का खेत			26410	438865	2280	41500
4	मक्के का दाना			0	0	104530	1801045
5	सीटीसी चाय			35	5511	35	5511
5	सफेद चाय			1.5	6500	0	0
6	चाय की पत्ती (हरा)			0	0	13210	196297
7	जूट			0	0	3565	147169
8	सरसों			0	0	102	5500
	कुल	**10100**	**141400**	**57829**	**1158922**	**123722**	**2197022**

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार